



डॉ.नीना छिब्वर

छूओ मगर प्यार से

मैं सारा दिन ठक-ठक सुनता रहता हूँ और कभी कभी तो मन करता है कि मेरे हाथ होते तो ठक-ठक करने वाले के हाथ पकड़ लेता और कहता "भाई मेरे थोड़ा सब्र रखा। अंदर जो है वो काम में व्यस्त होगा या सो रहा होगा या पूजा कर रहा होगा या खुद को व्यवस्थित करके ही तुम्हारा स्वागत करने आयेगा। "पर नहीं बाहर जो है वो तो हवा के घोड़े पर सवार है। दनादन हथेलियों से मुझे पीट रहा है। माना कि मैं निर्जीव हूँ। मनुष्य की तरह सांस नहीं लेता हूँ पर सोचो तो निर्+जीव= निर्जीव। जीव है मुझ में।

मेरे जन्म का भी गौरवशाली इतिहास है। सदियों पहले जब मानव सीधा सादा था तो मेरा स्वरूप बहुत ही साधारण था। घरों के बाहर घास फूस और ताड़ के पत्तों का नाम मात्र का दरवाजा लगता था। कहीं-कहीं तो एक चादर या टाट की बोरी मेरा रूप ले लेती थी। समय बदला, लोग बदले, उनकी मनोवृत्तियाँ बदली और बदला मेरा रूप। बदला मेरा आकार।

दरवाजे में भी बड़ा-छोटा, विशाल-लघु, मजबूत-कमजोर का वर्ग भेद आरंभ हुआ। साथ ही शुरू हुआ दिखावा। लकड़ी, चंदन, सोना चांदी, स्टील, शिप की लकड़ी, कांच के दरवाजों का भी चलन हुआ। अमीरों के दरवाजे, गरीबों के दरवाजे, मध्यम वर्ग के दरवाजे, मजलूमों के दरवाजे, हम न जाने कितनी जातियों में बंटते गये। जबकि सब का काम एक ही है सुरक्षा। घर के भीतर जो घटे वो बाहर न आए। दीवारों के भी कान होते हैं यह मुहावरा सबने सुना है तो एक बात और सुन लो दरवाजे के दिल होता है। यह दिल विशाल होता है।

सब देखता है, सुनता है, समझता है पर दिल में रखता हूँ।

दुश्मन चाहे भीतरी हो या बाहरी मैं अपना कर्तव्य पूर्ण निष्ठा से निभाता हूँ। न जाने कितनी पीढ़ियाँ मानव की सेवा में खप गयीं। मैं भी आप की तरह ही संवेदनाओं को महसूस करता हूँ। जब मुझ पर नन्हीं बिटिया स्वरितक बनाती है तो मैं गदगद हो जाता हूँ। नयी बहू के मेंहदी लगे हाथों की खुशबू एक नया नशा तारी कर देता है।

त्योहारों पर खूब सजावट होती है और बाद में कोई पूछता भी नहीं है।

मेरी गति मेरी जगह पर निर्भर है। अगर मेन गेट हूँ तो पूछो ही मत। सब को जाने की, आने की जल्दी है। पटक कर चल देते हैं। दर्द से चिल्ला रहा हूँ पर कौन देखें।

सबसे अनुरोध है कि थोड़ा प्यार से छू लो। कभी-कभी साफ करके तारीफ भी करो। आखिर तुम सबका रहस्य सिर्फ मैं ही जानता हूँ। हर कमरा मुझे प्यारा है। पुराना होने पर कबाड़ी को बेच देते हैं। वो हमारी ओर भी दुर्गति करता है।

मेरी विनती है कि दरवाजे को भी अपना मानो।

छूओ मगर प्यार से।